भूमिका

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का विषय ***'कामिनी काय कांतारे' और 'अमृतफल' की कथावस्तु का तुलनात्मक अध्ययन*** *है।* इस शोध अध्ययन का मूल उद्देश्य इन दोनों उपन्यासों में चित्रित मनुष्य की द्वन्दतापूर्ण जीवन संघर्ष का मूल्यांकन करना है। दो कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन रोचक और चुनौती भरा कार्य है। खासकर तब, जब ये दोनों उपन्यास अलग-अलग काल, स्थान, भाषा और समुदाय के लेखकों द्वारा लिखे गए हों। महेश कटारे द्वारा रचित उपन्यास 'कामिनी काय कांतारे' स्वानुभूत भावस्वरूप मुख्य रूप से तुलनात्मक जीवन से संबंधित घटनाओं-प्रसंगों को लेकर रची गयी एक उत्कृष्ट रचना है। यह उपन्यास हिंदी साहित्य जगत में काफ़ी चर्चित रहा है। उड़ीसा के प्रमुख साहित्यकार मनोज दास द्वारा रचित 'अमृतफल' मुख्य रूप से आम लोगों की जीवन से संबंध रखने वाली एक प्रमुख रचना है। द्वन्दतापूर्ण उपन्यास से संबंधित उड़िया में और भी कई कथा साहित्य लिखे गए हैं। लेकिन 'अमृतफल' का नाम प्रमुख है। 'अमृतफल' उपन्यास के लिए मनोज दास को सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया है। इन दोनों ही रचनाओं में मनुष्य के द्वन्दतापूर्ण जीवन संघर्ष को बेहतर तरीके से दिखाने का प्रयास किया गया है।

'कामिनी काय कांतारे' और 'अमृतफल' रचनात्मक रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन दोनों रचनाओं के बीच समानता के तार जुड़े हुए हैं। दोनों उपन्यासों में साधारण मनुष्य की वर्तमान मन की स्थिति, उसके द्वन्द आदि का जीवंत चित्रण हुआ है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस लघु शोध प्रबंध में उसका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

बचपन से ही मुझे इस विषय पर दिलचस्पी थी। मेरे अन्दर जब से सोचने समझने की क्षमता बिकसित हुई उस वक़्त से सोचता था कि संसार माया है। दादा और दादी इसकी अक्सर चर्चा करते थे उनसे सुनकर मुझे इस चीज़ को जानने की और भी इच्छा हुई। हाईस्कूल के दौरान स्वामी विवेकानंद के बारे में पढ़कर इस विषय के प्रति जानने की रूचि में वृद्धि हुई। जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया। इस विषय में जानकारी पाने की इच्छा मुझमें और भी बढ़ती गयी। गाँव में जीवन यापन करते हुए मेरी कई बार

इच्छा हुई कि मैं गौतम बुद्ध की तरह सत्य की खोज में निकल जाऊं। ऐसे ही शोध विषय को चयन करने की धारणा स्नातक स्तर से ही थी। तब भी इस प्रकार मोहन राकेश के उपन्यास 'लहरों के राजहंस' पर मैंने सेमिनार पेपर प्रस्तुत किया था। उसमे नन्द और सुंदरी के माध्यम से इस विषय को जानने में मुझे सहायता मिली। म.गां.अं.हिं.वि.वि. में भी पुनः मैंने मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' तथा आधे-अधूरे नाटक के विषय को अपने सेमिनार पेपर के रूप में चुना था। जिसमें कि मध्यवर्ग की त्रासदी थी। मेरे मन में इस बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने की धारणा बनी रही । इस विषय को जानने में मेरी पहले से इच्छा थी और इसीलिए मैंने इस विषय को अपने शोध के विषय के लिए चुना।

मुझे दो भाषाओँ में शोध का कार्य पूरा करना था और इसीलिए मैंने हिंदी के महेश कटारे के सुप्रशिद्ध उपन्यास 'कामिनी काय कांतारे' तथा ओडिया के सुविख्यात रचनाकार मनोज दास का 'अमृतफल' को शोध बिषय के लिए चुना। दोनों उपन्यास भर्तृहरि की कथा पर आधारित है। दोनों ही उपन्यासों कि कथावास्तु एक सी ही प्रतीत होता है। दोनों ही उपन्यासों में एक ऋषि ने एक फल जिसे अमृतफल कहा गया है उसे राजा को दिया ताकि उस फल को खाकर राजा हमेशा स्वस्थ, सबल एवं दीर्घायु रहे। जिससे वह प्रजा की अच्छी तरह से देखभाल कर पाये लेकिन राजा प्रेमवश फल रानी को देता है और रानी ने वह फल उपकार का ऋण चुकाने हेतु एक युवक को दे देती है तथा वही युवक पुनः प्रेमवश वह फल एक वैश्या को दे देता है । वैश्या जीवन को नरक सदृश मानकर वह उसे स्वयं न खाकर पुनः राजा को दे देती है। राजा रानी को बेवफा मानकर गृहत्याग कर देता है। फिर आता है और पुनः चला जाता है। इस प्रकार इसी कथा को बार-बार घुमाकर दिखाया गया है तथा इसमें यह भी दिखाया गया है कि मनुष्य की इच्छा एवं आकांक्षा कभी शांत नहीं हो पाती है। आम तौर पर देखा जाये तो बच्चे से लेकर बूढ़े होने तक मनुष्य की आकांक्षायें कभी तृप्त नहीं होती। यह आज की ही नहीं बल्कि पूरे आदम काल से चली आ रही प्रथा है। इसे पुरानों में भी दिखाया गया है कि किस प्रकार युद्ध में विजयी होने के बाद पांडव सबकुछ छोड़कर चले गए थे। केवल उसी में ही नहीं बल्कि इतिहास में

भी महावीर जैन, गौतम बुद्ध तथा राजा अशोक का चित्रण इस रूप में मिलता है । ठीक उसी प्रकार भर्तृहरि भी ऐसे राजा थे जो संसार त्याग कर चले गए थे।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को तीन अध्यायों एवं नौ उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में **'लेखक परिचय'** है। इसका पहला उप-अध्याय '**महेश कटारे का जीवन एवं साहित्य यात्रा'** में **'लेखक के जीवन परिचय एवं रचनाओं'** का वर्णन हुआ है। द्वितीय उप-अध्याय में '**मनोज दास का जीवन और साहित्य यात्रा**' है। इसमें उनका जीवन परिचय एवं रचनाओं के वर्णन को दिखाया गया है। इसके अलावा उनकी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक परिस्थितियों आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय **'कामिनी काय कांतारे'** और **'अमृतफल'** की कथावस्तु में दोनों उपन्यासों की कथावस्तु को चार उप-अध्याय में समझाने का प्रयास किया गया है। प्रथम उप अध्याय **'समानता'** है। इसमें दोनों उपन्यासों में पाई गई समानता को दिखाया गया है। द्वितीय उप-अध्याय **'विषमता'** है। 'कामिनी काय कांतारे' एवं 'अमृतफल' उपन्यासों में कई सारी विषमताएँ नज़र आती हैं, उसको इस उप-अध्याय में दिखाया गया है। तृतीय उप-अध्याय **'उद्देश्य'** में दोनों उपन्यासों का उद्देश्य वर्णन हुआ है।

तृतीय अध्याय 'कामिनी काय कांतारे' और 'अमृतफल' का शिल्प विन्यास में शिल्प के विभिन्न रचनाकारों के मत को दिखाया गया है। इसे तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसका प्रथम उप-अध्याय **'परिवेश'** है। इस उप-अध्याय में दोनों ही उपन्यासों के परिवेश की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की गयी है। दोनों रचनाकारों ने अपने-अपने उपन्यासों को बेहतर परिवेश के साथ प्रस्तुत किया है। द्वितीय उप-अध्याय में **'चरित्र'** है। जिसमें दोनों उपन्यासों के पात्रों का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। तृतीय उप अध्याय में **'भाषा'** है जिसमे दोनों उपन्यासों की भाषा को दिखाया गया है। अंत में उपसंहार तथा सन्दर्भ सूची दी गई है।

इस लघु-शोध-प्रबंध के पूर्ण होने के लिए मैं अत्यंत विनम्रता के साथ अपने निर्देशक डॉ. रूपेश कुमार सिंह के प्रति अपना विशेष आभार प्रकट करता हूँ। यह जानते हुए कि मैं अहिंदी भाषी क्षेत्र

से हूँ, जिससे भाषाई समस्या के कारण शोध में कठिनाईं हो सकती है, यह जानते हुए भी मुझे शोध करने के लिए न सिर्फ सहमति दी बल्कि निरंतर मेरे शोध अध्यायों का भाषाई संशोधन किया और जरूरी सुझाव-निर्देश भी देते रहे। तथा मुझे शोध कार्य के लिए सुझाव देने वाले डॉ शंकर लाल पुरोहित एवं 'कामिनी काय कांतारे' के रचनाकार महेश कटारे जी का भी तहे दिल से शुक्रिया अदा हूँ। मुझे इस मुकाम तक पहुँचाने में माता-पिता,दादी,नानी,भाई छोटू एवं अन्य परिवारजनों का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। उनके प्रति केवल आभार प्रकट करना एक प्रकार की धृष्टता होगी। लेकिन मेरे पास कोई और शब्द भी नहीं है।

कहते हैं कि दोस्तों के बिना जीवन अधूरा होता है। वे हमें हमेशा हर कार्य में मदद करते हैं। ऐसे ही आत्मीय जनों में मैं सबसे पहले अनु दी का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिनके अमूल्य सहयोग के बिना यह शोध कार्य पूरा नहीं हो सकता था। मेरे अग्रज रूपधर गोमंगो, प्रिय मित्र इश्वरकांति मुर्मू , चन्दन माझी, तुलसी प्रुस्टी, सुश्री सागरिका नायक, तरुण कुमार, अरूण सोनी, रघुनाथ पधान एवं अन्य मित्रों का भी बहुत-बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे शोधकार्य में सहयोग किया। अपने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय कर्मियों का विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहूँगा, जिन्होंने समय पर मुझे किताबें उपलब्ध करायी।

दिनांक- **(बुधुराम बेहेरा)**

स्थान